गोपियाँ श्रीकृष्ण के लिए कहती है - हे! विश्वासघाती! हम आपकी हर चाल को जानती हैं। आपने बांसुरी बजायी और हमें यहाँ आमंत्रित किया और अब आप इस अंधेरी रात में इस जंगल में हमें छोड़कर चले गए हैं! आप कैसे दयालु हैं? जब आप हमसे एकांत में मिलते थे तो आप अति मधुर स्वर में बात करते थे, जिससे आपके साथ मधुर मिलन की इच्छा पैदा हेती थी। और अब हमें यहाँ बुलाने के बाद, तुम चले गए! हम विलाप कर रही हैं! आपके लाल होंठों का अमृत विरह के सभी दुखों को दूर करता है! कृपया हमारे पास आइये और उस अमृत को हमें फिर से दीजिये! कृपया हमें अपनी दर्शन की दवा दीजिये जो विरह की आग के सभी दर्द से छुटकारा दिलाएगी! कृपया इस संकट से बाहर आने के लिए कोई उपाय सुझाइए!

जब आप गोचारण में बिताए लंबे दिन के बाद हमारे साथ पुनर्मिलन करते थे, तो असहनीय विरहाग्नी के दर्द से राहत पाने के लिए हम आपके चरण कमल को अपने कठोर स्तनों धीरे से लगाती थी, इस डर से कि हमारे कठोर स्तन आपके नाजुक कोमल चरणों को चुभें नहीं!

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

यह प्रेम की ऊँचाई है। स्थिति देखें। यह असीम खुशी और ऐसे विरह के दर्द की बात है जिसका थोड़ा अंश किसी भी मायिक जीव को मार देगा। राधा के विरह का टेंपरेचर इतना होता है उस विरह कि लौव से अनंत ब्रम्ह जलकर खाक हो जायेंगे। जो आग होती है, उसके उपर धुँआ होता है। उस धुँए के उपर एक हलकी लकीर होती है जिसे लौव कहते है। इस असह्य विरह दुःख में भी गोपियाँ अपना सुख नही चाहती हैं और सोच रही हैं कि 'हमारे प्रियतम को कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए!'

यदि आप इसकी तुलना सांसारिक प्रेम से करते हैं, जहाँ प्रेम हमेशा अपने स्वार्थ के लिए होता है, वहाँ जब प्रेम बढ़ता है तो प्रियतम की स्थिति का कोई विचार नहीं किया जाता। अधिक

प्यार, अधिक जोर से आलिंगन किया जाता है! और ये केवल अपने सुख के लिए किया जाता है! अगर माँ को चार दिनों के बाद अपना खोया हुआ बच्चा मिल जाता है, तो वह उसे इतना कसकर गले लगा लेती है कि बिचारे कोमल और नाजुक बच्चे का दम घुट जाए! लेकिन माँ गले लगकर अपना सुख बटोरने में व्यस्त है! कोई भी कल्पना भी नहीं कर सकता है कि गोपियों का श्रीकृष्ण के प्रति निष्काम प्रेम कैसा था! यही कारण है कि गोपियों का प्रेम आध्यात्मिक दुनिया में सबसे शीर्ष स्थान पर है और इस प्रेम के कारण, गोपियाँ आध्यात्मिक क्षेत्र में सबसे शीर्ष संत हैं! अन्य सभी संतों के प्यार में कुछ ना कुछ अपने सुख की कामना है, जबकि गोपी प्रेम इतना शुद्ध और इतना निष्काम है कि गोपी प्रेम में स्वसुख वासना लेश मात्र भी नहीं है।

इसलिए यदि आप आध्यात्मिक लक्ष्य निर्धारित करना चाहते हैं, तो इसे सबसे उँचा होने दें। हमे गोपी प्रेम का ही लक्ष्य बनाना चाहिए।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132